International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.newresearchjournal.com/advanced
Volume 1; Issue 4; April 2016; Page No. 01-03

रीवा जिले में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. (श्रीमती) रंजना तिवारी

विभागाध्यक्ष (शिक्षा) – श्रीयुत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंगेव जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु 160 शिक्षकों, 20 शासकीय एवं 20 अशासकीय विद्यालयों को दैव निदर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मापन हेतु डॉ. मीरा दीक्षित (1971) द्वारा प्रमाणीकृत कार्य संतुष्टि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में अंतर नहीं है।

प्रयुक्त शब्द : रीवा, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय, शिक्षक, कार्य संतुष्टि

प्रस्तावना
शिक्षा के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित कर सकता है। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण तथा चरित्र को उत्कृष्ठ बनाती है। शिक्षा एक साधन है, जो व्यक्ति के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक बौद्धिक एवं आंतरिक ज्ञान को बाहर लाने में योग देने वाली एक क्रिया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा ऐसा परिर्वतन लाती है। जिससे वह निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकता है।

शिक्षा के उद्देश्य मनुष्य जीवन के उद्देश्यों से भिन्न नही हैं। शिक्षा एक प्रणाली है जिससे जीवन के उद्देश्य प्राप्त होते है। शिक्षा मानव की उन अन्तर्निहित शक्तियों का, कुशलताओं एवं गुणो का विकास करती है जिससे वह अपने जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने मे सफल होता हैं। मानव जीवन का लक्ष्य है, धर्माचरण के द्वारा अर्थ और काम पुरूषार्थो की साधना करते हुए परम् पुरूषार्थ 'मोक्ष' अर्थात सत्चित आन्नदस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति करना। भारतीय दृष्टि से विद्या प्राप्त करने का मुख्य उद्देश्य भी यही बताया गया है।

डॉ. अल्तेकर ने प्राचीन भारत में शिक्षा के उद्देश्यों की गणना करते हुए कहा है कि शिष्य को पवित्रता और धर्म की भावना, चरित्र –निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक और सामाजिक कर्तव्य की भावना, सामाजिक समर्थता की समुन्नति और राष्ट्रीय संस्कृति के विस्तार की दृष्टि से शिक्षा देनी चाहिए।

श्री अरविन्द ने कहा है– हम जिस शिक्षा की खोज में है, वह एक भारतीय आत्मा और आवश्यकता तथा स्वभाव और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा है, केवल ऐसी शिक्षा नही जो भूतकाल के प्रति ही आस्था रखती हो, बल्कि भारत के विकासमान आत्मा के प्रति, उसकी भावी आवश्यकताओं के प्रति, उसकी आत्मोन्नति के प्रति और उसकी शास्वत आत्मा के प्रति आस्था रखती हो।

विद्या के अर्जन मे गुरू अर्थात शिक्षक का महत्व कम नहीं है। गुरू के सहयोंग से ही बालक विद्या के मार्ग में आगे बढता है। गुरू का सहयोग श्रद्धा और सेवा के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। श्रद्धा एवं सेवा से प्रसन्न होकर ही गुरू शिष्य को विद्यादान करने की ओर अभिमुक्त करता है। वास्तव में विद्या गुरू की ओर शिष्य के प्रति आत्मदान है जो कि एक आध्यात्मिक प्रक्रिया ही है। विद्या का व्यवसाय नहीं हो सकता। व्यवसाय से प्रेरित विद्या साधारण कोटि की ही होगी। शास्त्रों, कलाओ और दर्शनों आदि की उत्तम विद्या बन सका और न बन सकेगा। विद्या बौद्धिक साधना है। राग, द्वेष, क्रोध, अहंकार आदि मन के विकारों से बुद्धि आच्छादित हो जाती हैं, अर्थात ज्ञान शक्ति का नाश हो जाता है।

शिक्षा प्रदान करने में शिक्षक का स्थान प्राचीनकाल से ही सर्वोपरि रहा है। शिक्षका विद्यार्थियों के लिए पथप्रदर्शक, युगदृष्टा की भूमिका वहन करता है। शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की धुरी है। शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति में शिक्षक की प्रमुख भूमिका रहती है। वर्तमान के बदलते परिवेश, आवश्यकता एवं मूल्यों में किस प्रकार शिक्षा विद्यार्थियों के लिए एक सशक्त माध्यम बने ताकि वे स्वयं एवं समाज के साथ सामजस्य बैठा सके, ऐसी शिक्षा एक कुशल शिक्षक ही अपने विद्यार्थियों को दे सकता है। शिक्षक का यह उत्तरदायित्व है कि वह नई पीढ़ी में उत्तम संस्कार डाले शांति, प्रेम, बंधुत्व, अपनापन की भावना भरे जिससे वह दूसरों के प्रति संवेदनशील हो। एक शिक्षक अपना कार्य समर्पित भाव से तभी कर सकता है जब अपने कार्य से संतुष्ट हो। कार्य संतुष्टि शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कोर्नहाउजर (1930) ने किया।

कार्य संतुष्टि या व्यवसाय संतुष्टि का तात्पर्य मुख्यतः तीन प्रकार के कारकों से है। इन्हें व्यवसाय कारक, व्यक्ति कारक तथा समूह कारक भी कहते है। व्यवसाय कारक का तात्पर्य उन कारकों से है जिनका संबंध कार्य विशेष से होता है। इनमें व्यवसाय के स्वरूप वेतन, पर्यवेक्षक, कार्य परिस्थिति, सम्मान आदि मुख्य है। व्यक्ति कारक के अन्तर्गत ऐसे कारकों की गणना की जाती है जिनका संबंध कर्मचारी की व्यक्तिगत विशेषताओं से होता है। इनमें कर्मचारी की आयु, आकांक्षा का स्तर आदि मुख्य है।

उद्देश्य
रीवा जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना
रीवा जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नही है।

परिसीमाँकन
शोध हेतु रीवा जिले के राजस्व सीमा के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के 20 विद्यालयों के 80–80 शिक्षकों का चयन दैव निदर्शन विधि से किया गया।

न्यादर्श
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है जिसके अन्तर्गत 160 शिक्षकों का चयन जिसमें 80 शासकीय विद्यालय के शिक्षक और 80 अशासकीय विद्यालय के शिक्षक है।

शोध विधि
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

सर्वेक्षण अध्ययन विधि
सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

साक्षात्कार विधि
शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

साख्यिकीय विधि
सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिषत (%), S.D., Chisquare test, 'T' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विष्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

शोध उपकरण
प्रस्तुत शोध कार्य हेतु माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मापन के लिए डॉ. श्रीमती मीरा दीक्षित (1971) द्वारा निर्मित शिक्षक कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया है।

पूर्व अध्ययन समीक्षा
पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से – बेगम एवं धर्मागदन ने (2000)[1] द्वारा यह निष्कर्ष पाया गया कि महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पुरुष शिक्षकों से अधिक थी। साधू एवं शेरगील (2001)[2] ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षक सामाजिक परिपक्वता में उच्च थे तथा शैक्षणिक अभिक्षमता में श्रेष्ठ थे उन्होंने अपेक्षाकृत अधिक कार्य संतुष्टि प्रदर्शित की। सारी (2004)[3] ने पाया कि कार्य अनुभव वहाँ के शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण कारक है जो कार्यसंतुष्टि को प्रभावित करता है। पाई (2003)[4] ने अध्ययन के परिणाम में पाया कि जिन शिक्षकों में कक्षा प्रबंधन तनाव कम था उनमें कार्य संतुष्टि की मात्रा अधिक पायी गयी। गुप्ता एम. गेहलावत (2013)[5] ने अपने परिणाम में पाया कि पुरुष व महिला शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि का कार्यप्रेरणा के मध्य कोई अंतर नही पाया गया। शासकीय व निजी विद्यालयों, अधिक अनुभवों व कम अनुभवी तथा स्नातक व स्नातकोत्तर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में अंतर पाया गया। सिंह बीना (2015)[6] ने अपने अध्ययन में पाया कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मध्य कार्य संतुष्टि समान है उनमें अंतर नही है।

शोध क्षेत्र का परिचय
मध्यप्रदेश का रीवा जिला 24°18′ से 25° उत्तरी अक्षांश तथा 81°12′ से 82°8′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का क्षेत्रफल 6314 वर्ग किलोमीटर है। रीवा जिला समुद्र से 380 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। रीवा जिले के उत्तर में उत्तरप्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व में उत्तरप्रदेश का मिर्जापुर जिला, दक्षिण में मध्यप्रदेश का सीधी जिला तथा पश्चिम में मध्यप्रदेश का सतना जिला स्थित है।[7]

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या
शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जो निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 1: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	समीक्षात्मक समूह	शिक्षक संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	परिणाम
1	शासकीय विद्यालय	80	51.13	18.04	–4.67	सार्थक अन्तर नहीं है
2	अशासकीय विद्यालय	80	61.24	11.99		

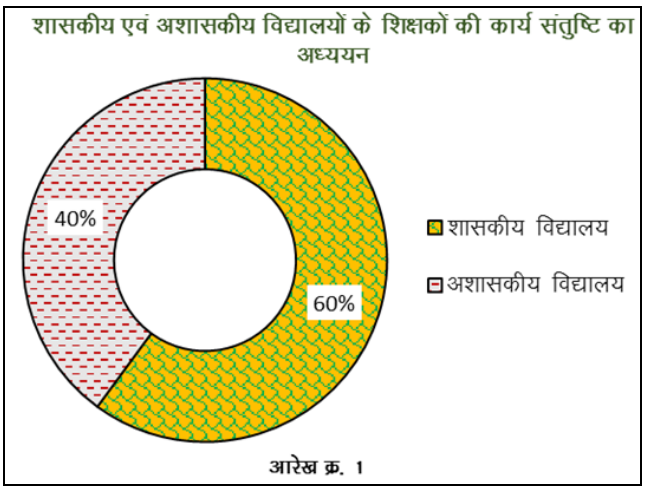

आरेख क्र. 1

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान 51.13 तथा शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान 61.24 है। शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की प्रमाणिक विचलन क्रमशः 18.04 व 11.99 है। दोनों के मध्य टी मूल्य की गणना करने पर मान –4.67 प्राप्त हुआ। 1.58 df के लिए टी मान तालिका मान 0.05 विश्वास स्तर पर 2.03 है तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 2.72 है, जबकि टी का गणना द्वारा प्राप्त मान –4.67 है। अतः गणना द्वारा प्राप्त मान कम है, अतः सार्थक अन्तर नही है।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

रीवा जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मध्य कार्य संतुष्टि समान है उनमें अंतर नही है।

सन्दर्भ

1. Beguam L Dharmedam. Sex differntation in job satisfaction of college teachers in Kerla state. Indian Journal of Psychometry and Educatio. 2000; 3(1):67-77.
2. Sandhu, Shergill. Effect of social maturity and teaching aptitude on job satisfaction of school head teacher's. *Indian Journal of Psychometry and education.* 2001; 32(I):55.
3. Sari H. An analysis of burnout and job satisfaction among Turkish special school head teacher's and teachers and factors affecting their burnout and job satisfaction, education & studies 2004; 30(3):291-306.
4. Pai JS. Job satisfaction among academic staff of nstitutions of higher learning in Lesotho. Unpublished Ph.D. Thesis. Bloem Fortein: University of the Free State, 2003.
5. Gupta M, Gehlvat M. Job satisfaction and work motivation of secondary school teachers in relation to some demographic variable acomparative study educationiya 2013; 2(1):3
6. सिंह बीना. दुर्ग जिल के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, रिसर्च लिंक, 137, 2015; XIV(6):99-100.
7. अग्निहोत्री, गुरू रामप्यारे. रीवा राज्य का इतिहास, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, म.प्र. भोपाल, 1990.